भारतवर्ष में आत्महत्याएँ : समाजशास्त्रीय चिंतन

डॉ. राजेश शुक्ला,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

डॉ.अनिता राजपुरिया ,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
बा.बी.पी.एस. शा.स्ना.महाविद्यालय धमतरी

=============***********===============

आत्महत्या वैयक्तिक विघटन की चरम अभिव्यक्ति है व्यक्ति का आत्म जब विभिन्न सामाजिक दबावों के इतने अधीन हो जाता है कि वह अपना जीवन समाप्त कर लेता है। तब इस स्थिति को हम आत्महत्या कहते है। कई लोग आत्महत्या को मानसिक दुर्बलता का परिणाम मानते है पर वास्तविकता यह है कि यह एक सामाजिक तथ्य या सामाजिक घटना भी है।

आत्महत्या को सामाजिक तथ्य के रूप में स्थापित करने का श्रेय इमाईल दुर्खीम को जाता है दुर्खीम का यह मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सामूहिक चेतना के अधीन होता है यह चेतना व्यक्ति को एक निश्चित रूप में व्यवहार करने को बाध्य करती है और जब दबाव स्वस्थ्य रूप में न होकर आवश्यकता से अधिक या कम हो जाता है तो व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है या उसकी आत्महत्या करने की संभावना बढ़ जाती है।

आत्महत्या शब्द का सामान्य अर्थ व्यक्ति द्वारा जानबूझ कर अपने जीवन को समाप्त करना है। आत्महत्या की अवधारणा इतनी सरल नही है। आत्महत्या जैसे व्यवहार अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक परिस्थितियां आदि जटिल तत्वों का समावेश होता है।

आत्महत्या क्या है?

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा ''आत्महत्या स्वच्छापूर्ण और जानबूझ कर की जाने वाली आत्महनन की क्रिया है।

दुर्खीम — आत्महत्या मृत्यु की उन समस्त घटनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है जो मरने वाले की सकारात्मक या नकारात्मक क्रिया का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होता है। जिसके भावी परिणाम (मृत्यु) को वह जानता है। आत्महत्या की परिभाषाओं से निम्न पक्ष प्रगट होते है :—

१. आत्महत्या में स्वंय व्यक्ति अपने को मारता है। यह कार्य दूसरों की सहायता से नहीं करता।
२. यह इरादतन अपने आप को जानबूझकर मारने की क्रिया है।
३. आत्महत्या में व्यक्ति अपने क्रियाओं के प्रति जागरूक होता है तथा उसका परिणाम क्या होगा वह जानता है।
४. आत्महत्या के लिए व्यक्ति स्वंय ही प्रयास करता है तथा वही उस विधि का चयन करता है जो आत्महत्या के लिए प्रयोग करेगा।
५. आत्महत्या व्यक्ति विघटन के साथ—साथ सामाजिक विघटन का भी प्रतीक है।

वैष्विक परिदृश्य एवं भारत में आत्म हत्याएँ

वैष्विक परिदृष्य में देखे तो दुनिया में लगभग आठ लाख लोग हर वर्ष हत्या करते है अर्थात दुनिया के किसी न किसी हिस्से मे लगभग हर ४० सेकेण्ड मे एक आत्महत्या दर्ज की गई तथा इसके २५ गुना लोग आत्महत्या का प्रयास करते है। इस तरह आत्महत्या एक वैष्विक समस्या भी है। दुनिया में आत्महत्या की दर गुयाना में सर्वाधिक ४४.२ प्रतिशत पाई गई। तत्पश्चात् कमशः दक्षिण कोरिया (२८.९ प्रतिशत) लंका (२८.८ प्रतिशत),

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)
GOVT. P.G. COLLEGE DHAMTARI

Scanned with CamScanner

27) छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कुपोषण दूर करने नवाजन त्यौहार की भूमिका
कु. शीतल सोनकर, डॉ. मनदीप खालसा, धमतरी (छ.ग.) || 113

28) पर्वतीय क्षेत्र में जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण (जनपद टिहरी गढ़वाल का विश्लेषण)
डॉ. दिनेश सिंह नेगी, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड || 117

29) महाविद्यालयी छात्रों की राजनीतिक अभिरुचि :उत्तराखण्ड सीमान्त जनपद चमोली के....
डॉ. जगमोहन सिंह नेगी,चमोली (उत्तराखण्ड) || 122

30) नागार्जुन साहित्य के विविध आयाम
डॉ. एम.एल. पाटले, जाँजगीर || 127

31) आदिवासी समाज : पहचान का संकट
ज्योति रानी,जम्मू || 130

32) भारतीय समाज पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव
सपना, बिजनौर || 132

33) रवीन्द्र कालिया के उपन्यास साहित्य में दरकते दाम्पत्य सम्बन्ध
Naresh Sharma, Jammu || 135

34) जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक चेतना
डॉ.निभा एस. उपाध्याय, अकोला || 138

35) आज का समय और भूमंडलीय यथार्थ
निशा वर्मा, जम्मू || 141

36) स्त्री और राजनीति— हादसे
विजय कुमार, जम्मू || 143

37) उत्तराखण्ड के अभ्यारण्यों एवं उद्यानों में संरक्षित वृक्षों व वनस्पतियों का धार्मिक एवं औषधीय महत्व
प्रो० डी० पी० सकलानी · धर्मेन्द्र यादव || 145

38) छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पण्डवानी की लोक संस्कृति
डॉ गौरी अग्रवाल, रायपुर (छत्तीसगढ़) || 153

39) पर्यावरण शिक्षा की वर्तमान में प्रांसगिकता
डॉ. उदय कालभंवर || 160

40) छत्तीसगढ़ में गांधी जी की यात्रा का अनुशीलन
डॉ. सचिन मंदिलवार, अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़) || 163

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)
Scanned with CamScanner

सन्दर्भः—

१. आर्यमित्र, १३ जून, १९७६, पृ० ८

२. भवानी लाल भारतीय, :'आर्यसमाज और राष्ट्रीयता' परोपकारी, जून १९७४, पृ० २८

३. यदजः प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्यमिया। यस्मान्नान्यत परमस्ति भतम्। —अथर्व. १०—७—३१

४. इत्था हि सोम इन्यदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्। शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्नु स्वराज्यम्।। (ऋग्वेद १—८०—१)

५. अदीनाः स्याम शरदः शतम्।

६. स्मारिका, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मुरादाबाद

७. मेरठ आर्य समाज के सौ वर्ष, प्रथम शताब्दी १९७८, पृ० ८६—८७

८. प्रेमचन्द शर्मा 'आर्यसमाज के कार्य', आर्यमित्र, १४ नवम्बर, १९८२, पृ. ५

९. फूलचन्द शर्मा 'आर्यसमाज की सुदशा' और दुर्दशा' परोपकारी, १९७५, पृ. ६७

१०. प्रकाशवीर शास्त्री 'राष्ट्रीय चेतना और आर्यसमाजः स्मारिका, आर्यसमाज शताब्दी समारोह, कानपुर पृ० ३२

११. राधेश्याम आर्यः 'आर्यसमाजः एक क्रांतिकारी आन्दोलन' आर्यगजट, फरवरी १९८०, पृ. १८

१२. हरि सिंह आर्य, महर्षि दयानन्द के उपकार, स्मारिका १९७९ आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, मुरादाबाद

29

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कुपोषण दूर करने वजन त्यौहार की भूमिका

कु. शीतल सोनकर
शोधार्थी, शोध केन्द्र, बी.सी.एस.
स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

डॉ. मनदीप खालसा
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), बी.सी.एस.
स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

****

संक्षिप्त सार — निर्धनता और कुपोषण आज विश्व के लिए एक चिंतनीय विषय है। यह तीसरे विश्व युध्द के बाद के देशों में अधिक पाया गया है। समाज और राष्ट्र की समृध्दि के लिए माता और शिशुओं का स्वस्थ होना आवश्यक है। विश्व में बहुत सारी माताएं एवं बच्चें कुस्वास्थ्य ,कुपोषण ,गरीबी ,अशिक्षा और अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं से ग्रसित है। कम और मध्यम आय वाले देशों में विशेषकर अतिनिर्धन्न परिवारों में कुपोषण देखने मिलता है। विश्व मे ८० लाख से अधिक बच्चें अपने जन्म के पहले दिन ही मर जाते है। जबकि ४० लाख से ज्यादा बच्चें मात्र कुछ महिने या दिन तक ही जीवित रह पाते है। विकासशील देशों में ५१ लाख बच्चें तो प्रसव के दौरान ही मर जाते है। कुपोषण की अधिकता से स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। यदि महिलाएं एवं बच्चे कुपोषित हो तो इसका दूष्प्रभाव पूरे घर—परिवार के साथ—साथ समाज पर पड़ता है। कुपोषण का सीधा तात्पर्य संतुलित और पौष्टिक आहार का अभाव है। खाद्यान्न उत्पादन की वृध्दि दर, जनसंख्या वृध्दि दर से अधिक होने पर भी भारत के आधे से अधिक राज्यों में गरीबी एवं ukskk.k d h I eL; k fo| eku gS UNDP संबंधी

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

No. ....
Dt. ....

RESEARCH PAPER

Commerce

Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

Bal Jivan Bima Yojnao ki Pragati (Bhartiy Jivan Bima Nigam Ke Raipur Mandal Karyalay Ke Sandarbh Me)

बाल जीवन बीमा योजनाओं की प्रगति

(भारतीय जीवन बीमा निगम के रायपुर मण्डल कार्यालय के संदर्भ में)

KEYWORDS

Anju Kumari

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) साईं महाविद्यालय सेक्टर 6 भिलाई (छ.ग.) पिन न. 490006

Dr. Chandrasekhar CHAUBEY

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) प्राचार्य, बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

ABSTRACT प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय जीवन बीमा निगम के रायपुर मण्डल कार्यालय [illegible] बाल जीवन बीमा योजनाओं की प्रगति पर आधारित है। भारतीय जीवन बीमा निगम में [illegible] है क्योंकि बाल जीवन बीमा का क्षेत्र अभी संकुचित है। परन्तु भारतीय जीवन बीमा निगम के [illegible] बढ़ती जा रही है। बाल जीवन बीमा के माध्यम से माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य की [illegible] भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा बाल जीवन बीमा की नई-नई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। [illegible] नहीं है। परन्तु भारतीय जीवन बीमा निगम जैसा विशाल संगठनात्मक ढाँचा तैयार करने में नवीन बीमा कम्पनियों को [illegible] पड़ेगा।

[illegible] सामाजिक ढांचे में रहते है उसमें अभी वर्तमान में गहरे परिवर्तन हुये है। आज बीमा में निवेश करते समय लोग न केवल सुरक्षा चाहते है बल्कि वे [illegible] की कमाई पर अच्छा प्रतिलाभ चाहते है जिससे वे अपने बच्चों की शिक्षा व [illegible] के लिए बेहतर प्रावधान कर सकें। भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपने [illegible] में बाल बीमा योजनाओं को विशेष महत्व दिया है। विभिन्न पॉलिसियों के [illegible] से निगम इन सब योजनाओं को संचालित कर रहा है जो माता-पिता को अपने बच्चों के भविष्य के लिए होने वाली चिंताओं से मुक्त कर रहा है।

[illegible] में बच्चों की उच्चतम् शिक्षा को लेकर जो चिंताये बनी रहती है उन समस्याओं का निदान हो रहा है साथ ही समाज में शिक्षित बच्चों की संख्या में वृद्धि हो रही है क्योंकि बाल बीमा योजनाओं के आसान प्रीमियम भुगतान से [illegible] वर्ग के लोग भी अपनी बचत व्यवस्था का प्रावधान आसानी से कर पा रहे है।

बाल जीवन बीमा की योजनायें शिक्षा के साथ-साथ विवाह में होने वाले खर्चों का [illegible] निवारण करती है. प्रीमियम के हिसाब से हर वर्ग के लोगों के लिए बाल जीवन बीमा योजनायें उपलब्ध है। जीवन बीमा ने ग्रामीण, निर्धन बच्चों के लिए भी [illegible] सी योजनाये उपलब्ध करायी है। जो समाज को एक उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। ग्रामीण बच्चों के 9वी से 12वी तक पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति के [illegible] 100 रूपये प्रति बच्चा दिया जाता है अधिकतम दो बच्चों को। वित्तीय वर्ष [illegible] 10 के दौरान 86905 बच्चों को 4.15 करोड़ राशि दी जा चुकी है जो [illegible] की सुरक्षा में सराहनीय योगदान रहा है। बाल जीवन बीमा योजनाओं के क्रियान्वयन से गरीब से गरीब बच्चों को छात्रवृति की सुविधा प्रदान की गई साथ ही शिक्षा ऋण की व्यवस्था का भी प्रावधान बनाया गया जो एक विकासशील समाज को विकसित करने में सहायक है जो लोग अपने बच्चों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण उनके भविष्य को सही दिशा नहीं दे पाते थे आज वे इन योजनाओं के कारण अपने बच्चों के भविष्य को सही दिशा निर्देश दे पा रहे है जिससे समाज में एक नई विकास का आरंभ हो रहा है।

बाल जीवन बीमा योजनाओं के प्रारंभ होने से समाज में बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा, विवाह के क्षेत्र मजबूत और सबल हुआ है सब कल्याणकारी योजनाओं के कारण संभव हुआ है इन योजनाओं के माध्यम से बच्चों के भविष्य को उनके माता-पिता के द्वारा सुरक्षित किया जा सकता है।

[illegible] का साल अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाया गया। इस संदर्भ में बीमा निगम ने बच्चों के लाभ हेतु नई योजना तैयार की। इस बीमा पत्र को बालक के माता-पिता या कोई भी संरक्षक ले सकता है। इसकी अधिकतम अवधि 50 वर्ष की होगी व न्यूनतम प्रीमियम देय राशि 260 रूपये से कम नहीं होगी। प्रीमियम केवल वार्षिक ही जमा होगी। [illegible] वर्ष से कम की अवधि के लिए यह पॉलिसी नहीं दी जायेगी।

बाल जीवन बीमा के प्रकार

भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपने व्यवसाय में बाल जीवन बीमा योजनाओं को विशेष महत्व दिया है। विभिन्न प्रकार की पॉलिसियों के माध्यम से निगम इन सब योजनाओं को संचालित कर रहा है। यह योजनाऐं बच्चों की शिक्षा बच्चों के विवाह एवं पूंजी बाजार से संबंधित है। बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर संचालित की जाने वाली योजनाएँ बच्चों तथा उनके माता-पिता को आर्थिक चिंताओं से मुक्ति प्रदान करते हैं वे योजनाएँ निम्नलिखित है

क्रमांक	पॉलिसियों के नाम	[illegible]
1	जीवन किशोर	102
2	जीवन छाया	103
3	कोमल जीवन	[illegible]
4	जीवन [illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]
6	बंदोबस्ती योजना	[illegible]
7	धन वापसी योजना	[illegible]
8	विवाह बंदोबस्ती योजना	[illegible]
9	जीवन सुरभी	[illegible]
10	[illegible] योजना	[illegible]
11	[illegible] योजना	[illegible]
12	[illegible]	[illegible]

अध्ययन का उद्देश्य

1. बाल जीवन बीमा योजनाओं का अध्ययन करना।
2. जीवन बीमा निगम में बाल जीवन बीमा योजनाओं के योगदान को जानना
3. रायपुर मण्डल में संचालित बाल जीवन बीमा योजनाओं की वर्षवार प्रगति को जानना
4. बाल जीवन बीमा योजनाओं के सामाजिक प्रभाव को जानना
5. सबसे लोकप्रिय बाल जीवन बीमा योजनाओं का अध्ययन करना एवं समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. वर्तमान समय में बाल जीवन बीमा निगम की प्रगति और संभावनायें क्या है?
2. छोटी उम्र के बच्चे जिनके वयस्क होने पर किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक मुश्त राशि की आवश्यकता माता-पिता को महसूस कराते हैं।
3. जीवन बीमा निगम द्वारा जारी बाल योजनायें वर्तमान में लोकप्रियता की चरम सीमा पर है।
4. बाल योजनायें बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिये एक अनिवार्यता बन गई है।
5. बाल जीवन बीमा योजनायें बचत के साथ-साथ विनियोग एवं अन्य परिस्थितियों में एक विशिष्ट सुरक्षा की गारंटी होती है।
6. जीवन बीमा का कुल व्यवसाय का लगभग 15 प्रतिशत बाल जीवन बीमा योजनाओं का है।

अध्ययन क्षेत्र व अवधि

अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में स्थित भारतीय जीवन बीमा

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

Scanned with CamScanner

2016-06 (2)

(Footnotes)

1 जैन एवं माथुर : आधुनिक विश्व का इतिहास, जयपुर प्रकाशन, २०१२, पृ. ३९९

2 डॉ. वीरकेश्वर प्रसाद सिंह आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएं, पटना, १९७४,पृ.२६६

3 डॉ. सुषमा नारायण भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिन्दी साहित्य मे अभिव्यक्ति,पटना,पृ.१,

4 ई. श्रीधरन इतिहास–लेखन (५०० ई. पू. से सन् २००० तक), अनुवाद–मनजीत सिंह सलूजा, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली,पृ३९०.

5 डॉ. सत्या एम. राय : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिन्दी मध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. १९२

6. यशपाल ग्रोवर आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.२१०

7. इण्डिया, लन्दन, १८८८

8. सुमित सरकार : आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, १९९९,पृ.१८–१९.

9. बी. डी. कुलश्रेष्ठ : भारत का वैधानिक एवं सवैधानिक इतिहास (ईस्टन बुक डिपो २००४), पृ.३७५–३७६.

10. डॉ. कालूराम शर्मा एवं डॉ. प्रकाश व्यास : भारत का इतिहास (१८८५–१९५०), पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृ. १–२.

11. एस.चन्द:आधुनिक भारत का इतिहास,पृ.२९१.

12. डॉ. सत्या एम. राय : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिन्दी मध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. १९२

13. सुमित सरकार : आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, १९९९, पृ.२२–२३.

14. डॉ. एस. एन. दूबे : इतिहास दर्शन एवं लेखक, जौनपुर, १९९७–९८, पृ. १३०,

15. Clark, 'The Role of Bankim Chandrs in the Development of Nationalism,' in Philips, ed., Historians of India, Pakistan & Ceylon, 436.

16. Majumdar, 'Nationalist Historians', in Philips, ed. Historians of India, Pakistan & Ceylon, 436.

17. Ibid.,425.

18. Thapar, Ancient India Social History

◆◆◆

36

छत्तीसगढ की भुंजिया जनजाति में सामाजिक गतिशीलता

डॉ. अनिता राजपुरिया
प्राध्यापक समाजशास्त्र,
बी.सी.एस.शा.स्ना.महा.धमतरी

श्रीमति मीनाक्षी देवांगन
शोधार्थी,
शा.दू.ब.महिला स्ना.स्वशासी महा.रायपुर

****

भुंजिया जनजाति छत्तीसगढ की अत्यन्त पिछड़ी जनजाति में से एक है। छत्तीसगढ शासन द्वारा प्रदेश में निवासरत् पांच विशेष पिछड़ी आदिम जनजाति क्रमशः कमार, बैगा, अबूझमाडिया, पहाड़ी कोरवा एवं बिरहोर की श्रेणी में भुंजिया तथा पंडो जनजाति को चिन्हित किया है। शासन द्वारा विशेष पिछड़ी आदिम जनजातियों की तरह ही भुंजिया विकास अभिकरण जो गरियाबंद में स्थित है। इनके विकास के लिए विशेष प्रयासरत् है। भुंजिया जनजाति अभी भी वनाश्रित जीवन व्यतीत करती है, इनकी कृषि की तकनीक एवं उत्पादन के अन्य साधन आज भी प्रारंभिक अवस्था में है परन्तु आज यह जनजाति विकास की प्रक्रिया से जुड चुकी है तथा सामाजिक गतिशीलता के सक्रमण के दौर से गुजर रही है। भुंजिया जनजाति के अर्थ के सबंध मे हीरालाल और रसेल (१९१६) ने Bhunjiya का अर्थ 'भूमि पर आश्रित रहने वाला' एवं प्रो.श्यामचरण दुबे (१९५२) ने भुंजिया शब्द का अर्थ 'भुजा हुआ मांस खाने वाला या भुजकर खाने वाला' बताया जिसके कारण यह जनजाति भुंजिया कहलायी। भुंजिया जनजाति के दो उपसमूह है पहला चौखुटिया भुंजिया और दूसरा चिड़ा भुंजिया। चिड़ा भुंजिया

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)
GOVT. P.G. ... DHAMTARI

Scanned with CamScanner

29

मानव विकास समूह

डॉ. मनदीप कौर खालसा
प्राध्यापक [illegible]
बी.सी.एस. गव्हर्नमेंट. पो.जी. कॉलेज,
धामतरी, छत्तीसगढ

डॉ. व्ही. एम. जुर्री
प्राध्यापक [illegible] विभाग प्रमुख
बी.सी.एस. गव्हर्नमेंट पी.जी. कॉलेज,
धामतरी, छत्तीसगढ

****

प्रस्तावना –:

मानव विकास की अवधारणा की व्याख्या करते हुऐ यू एन.डी.पी. की मानव विकास रिपोर्ट १९९७ में उल्लेख किया गया "आय केवल एक विकल्प है जिसे लोग प्राप्त करना चाहेगें यह बहुत महत्वपूर्ण हैं" आय एक साधन है। जबकि मानव विकास एक ध्येय है।

महबूब उलहक के मार्गदर्शन में १९९० में मानव विकास रिपोर्ट के प्रथम के पश्चात् मानव कल्याण के मापों का निर्माण करने के लिये तीन माप विकसित किये गये।

- मानव विकास सूचकांक
- लिंग संबधित विकास सूचक
- मानव निर्धनता सूचकांक

महबूब उलहक के अनुसार–आर्थिक संवृद्धि में केवल आय पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है। जबकि मानव विकास में सभी मानवीय विकल्पों चाहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनैतिक हों।

मानव विकास आवश्यक है।

- पाल स्ट्रीटम कहते है आर्थिक विकास का उद्देश्य स्त्रियों, पुरूषों, बच्चों की वर्तमान एवं भावी पीडियों को लक्ष्य के रूप में देखना ।
- पोषित स्वास्थ्य शिक्षित कुशल और सक्षम श्रम शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्पादक परिसम्पत्ति है।
- मानवीय विकास परिवार के आकार को छोटा करने में सहायता पहुँचाता है। शिक्षा के स्तर में (विशेष रूप से लड़कियों के शिक्षा के स्तर) में सुधार, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, बाल मृत्यु दर में कमी से जन्मदर में गिरावट आती है। शिक्षा में सुधार लोगों में छोटे परिवारों के प्रति आकर्षण जागृत होता है।
- भौतिक पर्यावरण की दृष्टि में भी मानव विकास अच्छा है। गरीबी में कमीं से वनों के विनाश में कमी आती है। शिक्षा में वनो का सरंक्षण किया जाता है।
- गरीबी में कमी से एक स्वस्थ समाज के गठन लोकतंत्र के निर्माण, सामाजिक स्थिरता में सहायता मिलती है। महबूब उलहक के अनुसार–मानव विकास के चार अनिवार्य घटक है–

१. औचित्य (Equty)

- आय का समान वितरण समाज में हो। ऐसी राजकोशीय नीति हो जिसमें आय का हस्तांतरण अमीरों से गरीबों में हो।
- राजनैतिक अवसरों में समानता लायी जाये। लोगों में मतदान के प्रति जागरूकता लायी जाये।
- महिलाओं एवं अल्पसंख्यकों में राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आगे लाया जाए।

२. धारणीयता Sustainbilty – इसके लिये भौतिक, मानव, वित्तीय और पर्यावरण संबंधी पूंजी को बनाये रखना है। विकास के अवसरों को वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के बीच वितरित करना है। जीवन स्तर सबंधी विषमताओं को दूर करना ।

३. उत्पादकता Productivity – भौतिक पूंजी से देश को समृद्ध बनाया जा सकता है। ऐसा जरूरी नहीं कि भौतिक पूंजी से ही उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। अनेक पूर्वी एशियाई देश जैसे,

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

DHAMTARI

39

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला में सविनय अवज्ञा आंदोलन

Dr.Smt. Hemwati Thakur
BCS.Govt.P.G. College
Dhamtari (C.G.)

==========**********==========

स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिला का अविस्मरणीय योगदान रहा । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में छत्तीसगढ़ को पृथक पहचान दिलाने में जिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा । जिला मुख्यालय धमतरी से १८ कि.मी. दूर कंडेल गांव के किसानों का नहर सत्याग्रह की सफलता को गांधी जी की पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन का श्रेय दिया जाता है । २१ दिसम्बर १९२० ई. को धमतरी आये और यहाँ की जनजागरूकता को देखकर बहुत खुश हुए । यही वजह था कि २४ नवम्बर १९३३ ई को दूसरी बार हरिजनोद्धार के सिलसिले में पुन: आगमन हुआ ।

६ अप्रैल १९३० ई को गांधी जी ने दांडी में समुद्र के तट पर नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया । यह पूरे देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ का संकेत था । इसका अनुकरण करते हुए लोगों ने स्थान–स्थान पर सरकारी कानूनों को तोड़ना षुरू किया । सविनय अवज्ञा आंदोलन में निम्नलिखित कार्यक्रम शामिल किया गया था ।

१. नमक बनाना और कानून का उल्लंघन करना ।
२. सरकारी स्कूलों और दफ्तरों का बहिष्कार करना ।
३. शराब, अफीम एवं विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना देना।
४. विदेशी वस्त्रों की होली जलाना
५. टैक्स न देना ।

धमतरी जिला में सर्वप्रथम नारायणराव मेघावाले ने अप्रैल १९३० ई में महाकोसल प्रातीय राजनैतिक परिषद रायपुर से भाग लेकर आने के बाद बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के घर के पास विशाल जनसमुह के समक्ष दो तोला नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया । जब उसे नीलाम किया गया तब करणसी भाई ने ६१ रूपये में खरीदकर अद्भूत देशभक्ति का परिचय दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन को व्यापक रूप देने के लिए तहसील कार्यकारिणी को सत्याग्रह समिति में परिवर्तित किया गया । सत्याग्रह के सफलता पूर्वक संचालन के लिए नत्थूजी जगताप के बाड़े में एक मई १९३० ई को सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की गयी । स्वयंसेवकों को वहाँ प्रशिक्षण दिया जाता था । आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क थी । आश्रम को संचालित करने के लिए चार समितियाँ बनायी गयी थी ।

१. कोश संग्रह समिति
२. अन्न व्यवस्था समिति
३. भोजन व्यवस्था समिति
४. आश्रम व्यवस्था समिति

प्रशिक्षण अवधि एक सप्ताह की होती थी । सत्य, अहिंसा अछूतोद्धार, खादी प्रचार–प्रसार सहनशीलता, विनम्रता इत्यादि का प्रशिक्षण दिया जाता था । प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात्, प्रत्येक स्वयं सेवक को एक गांधी टोपी , एक स्वयंसेवक लिखा हुआ केसरिया रंग का पट्टा और गांव के लिए एक तिरंगा झण्डा दिया जाता था । तीन महीने में इस आश्रम में १५०० स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर गांव–गांव में जाकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ प्रचार–प्रसार देशभक्ति की भावना जागृत किया ।

स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार–प्रसार और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार पूरे जिले में किया गया। विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी। मई १९३० ई. में धमतरी शहर के व्यवसायी करणसी भाई ने खादी वस्त्र भण्डार की स्थापना की । परन्तु मशीनों द्वारा निर्मित विदेशी माल से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाने के कारण दुकान को बंद करना पड़ा।

जून १९३० ई का गट्टासिल्ली सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान की महत्वपूर्ण घटना रहीं।

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

Scanned with CamScanner

दूसरी और इन्हीं वर्गों की कमाई पर उच्च वर्ग वैभव-विलासमय, ऐशो-आराम का जीवन बीता रहा है । यही कारण है कि केदार जी कविता किसान, मजदूर और श्रमिक वर्ग के जीवन की त्रासदियों की बोलती तस्वीरें खींचती हैं । जिनमें उक्त वर्ग के जीवन की मजबूरियों, विवशताओ, विकृतियों एवं संघर्षो के गहरे रंग उकेरे हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि केदारनाथ अग्रवाल जनजीवन को अपन्नी कविता का विषय बनाते है गांव के किसान, मजदूर, श्रमिक उन्नकी कविताओं में प्रमुखता से विद्यमान हैं । अत: उन्नकी प्रतिबध्दता मूलत: शोषितों, श्रमशील कृषकों, मजदूरों और श्रमिकों के प्रति हैं । वे शोषित, पीडित जनता के उत्थान एवं खुशहाली के लिए प्रतिबध्द हैं । उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कविवर केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की भाव-भूमी जनवादी भाव -बोध एवं प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि की हैं ।

➢ संदर्भ ग्रंथ :-

१)फूल नहीं रंग बोलते हैं -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४
२) हें केदार खरी -खरी -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४
३)गुलमेंहदी -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४

❖❖❖

Interdisciplinary Multilingual
Referred Journal
Contact : 098 50 20 32 95

Vidyawarta

44

असहयोग आंदोलन में धमतरी जिला का योगदान

डॉ.(श्रीमती) हेमवती ठाकुर
सहायक प्राध्यापक इतिहास
बाबू छोटेलाल शास.स्नात.महा.
जिला धमतरी (छ.ग.)

==========**********==========

६ जुलाई सन् १९९८ को मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत धमतरी को एक राजस्व जिला का दर्जा दिया गया था । वर्तमान में छत्तीसगढ़ के २७ राजस्व जिलों में से एक प्रमुख जिला है। प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का केन्द्र धमतरी गोंडवाना का गढ़ था । खाईयुक्त किले का अवशेश आज भी स्पश्टत: दिखाई देता है । गोंड़ राजाओं की राजधानी धमतरी मराठा शासन काल में एक परगना था । ब्रिटिश शासन काल में सन् १८५५ में तहसील बनाया गया । २७ जुलाई सन् १८८१ ई को नगरपालिका परिषद् का गठन किया गया । छत्तीसगढ़ का सबसे पुराना तहसील और नगरपालिका होने का गौरव प्राप्त है । १५ अगस्त २०१४ को मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह द्वारा नगरनिगम बनाने की घोशणा की गयी । इस प्रकार धमतरी का इतिहास एंव संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण रहा है ।

स्वतंत्रता आंदोलन में धमतरी जिला का अवस्मिरणीय योगदान रहा । स्वतंत्रता आदोलन की प्रत्येक गतिविधियों में जिले के वीर सपूतों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और कठोर जेल यातनाएँ सहन की। सन् १९०५ ई. का बंगाल विभाजन की घोषणा ने लोगों को उद्वेलित कर दिया । यद्यपि यहाँ जन जागरूकता १९ वीं शताबदी के उत्तरार्द्ध से ही परिलक्षित होने लगी थी सन् १९२८ का कंडेल नहर सत्याग्रह धमतरी जिला को स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में ही नहीं

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

Scanned with CamScanner

Bull. Cal. Math. Soc., 107, (5) 411–420 (2015)

ECONOMIC AND PERFORMANCE EVALUATION OF A STOCHASTIC MODEL WITH HARDWARE FAILURE AND HUMAN ERROR

HEMANT KUMAR SAW[1] AND V.K. PATHAK[2]

(*Received 22 January 2015*)

Abstract. Human plays a pivotal role in the design, development and operational phases of engineering systems. Reliability evaluation of system without taking into consideration the human element does not provide a realistic picture. Hence, there is a definite need for incorporating the occurrence of human errors in system reliability evaluation. The proposed study we developed a stochastic Reliability model of single unit system in manufacturing plant. System has been investigated under the assumption that unit works in three different states: normal state, partial failed state and total failed state. The system suffers three types of failures viz; Hardware failure, Critical human failure and Non-critical human failure. After pre specific time known as Maximum operation time (MOT) the system undergoes for PM from partial failed state. There is a single server who visits the system immediately whenever needed to carry out preventive maintenance and repair. The unit works as good as new after preventive maintenance and repair. The failure and maximum operation times of the unit are distributed exponentially while the distributions of PM and repair times are taken as arbitrary. Using semi Markov process and regenerative point techniques expression for various reliability characteristics are obtained and expected profit is calculated. A special case for the proposed system was given in which human error is not considered. The results indicated that the system without human failure is greater than the system with human failure with respect to the MTSF, steady state availability and the profit.

1. Introduction. Gupta R.et al. (2006) have studied Stochastic analysis of a compound redundant system involving Human Failure. Goel, L.R., et al.(1984) studied Stochastic analysis of a two-unit parallel system with partial and catastrophic failures and preventive maintenance, Kadyan, M.S., et al. (2004) analyzed Stochastic analysis of non identical units reliability models with priority and different modes of failure Mahmood, M., et al.(1987) have studied Availability Analysis of a Repairable System with Common Cause Failure and One Standby Unit, Dhillon, B.S., et al. (1992) analyzed Stochastic Analysis of Standby System with Common Cause Failure and Human Error. Gupta, P.P., et al.(1986) studied Cost Analysis of a 2-unit Standby Redundant Electronic System with Critical Human Errors. Kumar, R.S., et al. (2010) have analyzed Reliability and cost benefit analysis of a three stage Operational warranted sophisticated system with various minor and major faults. Singh, S.K., et al. (1995) studied stochastic analysis of a two-unit cold standby system subject to maximum operation and repair time. Haggag, M.Y. (2011). Profit Analysis of Two-Dissimilar-Unit Cold Standby System with Three States under Human Failure. In these papers no attention was paid towards the effect of

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

B.C.S. GOVT. P.G. COLLEGE DHAMTARI (C.G.) No. Dt.